च्यांग काई शेक के शासन में चीन
(CHINA UNDER CHANG KAI SHEK)

डॉ. सुनयात सेन के समय में ही कुआमिनतांग दो भागों में विभक्त हो गया। **एक पक्ष वामपंथियों का था तो दूसरा पक्ष दक्षिणपंथियों का था।** वामपंथी पक्ष साम्यवादियों के प्रभाव से प्रभावित था जिसका नेतृत्व वांग चिंग वी (Wang Ching Wei) कर रहा था। कुओमिनतांग दल की कार्यकारिणी में उसका जबरदस्त प्रभाव था। दक्षिण पंथी दल ने हमेशा ही वामपंथी दल को सन्देह की दृष्टि से देखा। डॉ. सुनयात सेन की मृत्यु के पश्चात् ये मतभेद उभरकर सामने तो आए, परन्तु डॉ. सुनयात सेन के मृत्यु के समय के संदेश ने उन्हें एक नई प्रेरणा दी। अतः कैंटन सरकार को औपचारिक रूप से राष्ट्रवादी सरकार घोषित करते हुए इसका अध्यक्ष कुओमिनतांग सेना के सेनापति च्यांग काई शेक को बनाया गया।

च्यांग काई शेक का जीवन परिचय
(LIFE SKETCH OF CHANG KAI SHEK)

च्यांग काई शेक का जन्म 30 अक्टूबर, 1888 ई. में पेकियांग प्रान्त स्थित फेंगुआ जिले के चिको नामक ग्राम में एक साधारण राज्याधिकारी के घर हुआ था। बाल्यावस्था में ही उसे पिता की स्नेहिल संरक्षरता से वंचित होना पड़ा। पिता की मृत्यु के कारण च्यांग को अपने प्रारम्भिक जीवन में अनके कष्टों का सामना करना पड़ा। **बचपन से ही च्यांग पर उसकी मां का व्यापक प्रभाव पड़ा। वह बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारों का पक्षपाती बन गया।** कैंटन के सैनिक विद्यालय में सैन्य शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उसने 1907 से 1911 ई. तक जापान में सैन्य विज्ञान की शिक्षा अर्जित की। इसी समय डॉ. सेन के विचारों का प्रबल समर्थक बन गया और 1911 में क्रान्ति के समय सेना में भर्ती हो गया। शंघाई युद्ध में उसकी वीरता ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया, परन्तु शीघ्र ही उसने जापान के सैन्य विभाग की सेवा का त्याग कर दिया और 1911 ई. से शंघाई में व्यापार प्रारम्भ किया। इस परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण यह था कि अब वह यह विचार करने लगा कि सफल राजनीतिज्ञ के लिए धन की आवश्यकता एक महत्वपूर्ण पहलू है। व्यापार करने की इस प्रवृत्ति के दौर में उसका पश्चिमी व्यापारियों के माध्यम से पश्चिमी राजनीतिज्ञों से सम्पर्क हुआ। इसका सबसे बड़ा परिणाम यह निकला कि अब उसने पुनः सैनिक जीवन प्रारम्भ करते हुए राजनीति में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया। रूस की साम्यवादी क्रान्ति से प्रभावित होकर वह रूस गया और वहां की सैन्य प्रणाली का अध्ययन किया। **चीन की क्रान्ति के विषय में उसने ही रूस का प्रथम परिचय दिया।** 1924 ई. में उसने कैण्टन स्थित व्हामपूवा सैनिक विद्यालय (Whampoa Military Academy) के अध्यक्ष पद को संभाला 1925 ई. में वह कुओमिनतांग की स्थायी समिति (Standing Committee) का सदस्य बना और 1926 ई. में डॉ. सेन के पश्चात् उसने राष्ट्रीय सेना के सेनापति के पद को संभाला।

राष्ट्रीय एकता की ओर (Towards National Integration)

राष्ट्रीय सेना के सेनापति के पद पर आसीन होने के पश्चात् च्यांग काई शेक को डॉ. सुनयात सेन के स्वप्न को साकार करने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निर्वाह करना था। च्यांग काई शेक ने प्रारम्भ से ही इस गुरुतर भार को कठिन नहीं माना। स्वयं उसी के शब्दों में, "**चीन को स्वतन्त्र करो। यह कठिन नहीं है। एक**

या दो, अधिक से अधिक तीन वर्ष में यह कार्य पूर्ण हो जाएगा।''[1] अतः सेनापतित्व का पद संभालते ही वह सैन्य बल के साथ दक्षिण चीन से उत्तर की ओर बढ़ता चला गया। आक्रमण के इस दौर में उसे पर्याप्त सफलता मिली। अक्टूबर, 1926 ई. में उसने वूचांग प्रदेश पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। फरवरी 1927 में **हांको** (Hanko) पर विजय प्राप्त की। मार्च 1927 ई. में शंघाई एवं नानकिंग का पतन हुआ। नानकिंग पर च्यांग काई शेक के आधिपत्य ने विदेशी शक्तियों के कान खड़े कर दिए। उन्होंने शेक पर दबाव डालना प्रारम्भ कर दिया कि वह कम्युनिस्टों को दण्डित करे। च्यांग ने विदेशी शक्तियों को आश्वस्त किया कि **'वह साम्यवादियों को अपने नियन्त्रण में रखने का भरसक प्रयत्न करेगा।'**

अब च्यांग काई शेक ने नानकिंग को अपनी राजधानी बनाकर हांको तथा उसके निकटवर्ती भू-भागों में निवास करने वाले कम्युनिस्टों का दमन प्रारम्भ कर दिया। रूसी साम्यवादियों को चीन से निष्कासित किया गया। साम्यवादियों को जेल में डाल दिया। च्यांग के रुख को देखते हुए रूसी परामर्शदाता **योरोडीन** को भी अब यह कहना पड़ा कि, **''चीन की तत्कालीन परिस्थितियों में मार्क्स के सिद्धान्त सार्थक नहीं होंगे।''** इसी समय **माओत्से तुंग** (Mao-Tse-Tung) ने कृषकों को संगठित कर हांको में आन्दोलन कर दिया। च्यांग काई शेक ने इस साम्यवादी आन्दोलन के दमन हेतु सम्पूर्ण दक्षिणी चीन में सेना का जाल फैला दिया। 1927 **की ग्रीष्म ऋतु में कुओमिनतांग के समाजवादी दल को अवैध घोषित करते हुए च्यांग काई ने बोरोडीन एवं उसके साथियों को चीन से चले जाने के आदेश दे दिए और कृषक आन्दोलन को कुचल दिया गया।**

इस प्रकार साम्यवादियों की शक्ति को दबाने के पश्चात् च्यांग काई शेक ने 1928 ई. में पीकिंग पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् च्यांग ने मंचूरिया पर कुओमिनतांग शासन स्थापित करने पर विचार किया, परन्तु जापान के विरोध के कारण वह ऐसा न कर सका। इसी बीच मंचूरिया के सेनाध्यक्ष लियांग ने कुओमिनतांग सरकार से एक समझौता कर लिया, फलतः मंचूरिया पर भी कुओमिनतांग का प्रभाव स्थापित हो गया। इस प्रकार 1928 ई. तक प्रायः सभी सैन्य शासक चीन की नवस्थापित **नानकिंग सरकार** के अधीन आ गए तथा चीन की राजनीतिक एकता सिद्धान्ततः पूर्ण हुई।

च्यांग काई शेक अथवा नानकिंग सरकार की गृह नीति
(HOME POLICY OF CHANG KAI SHEK OR NANKING GOVERNMENT)

1928 ई. तक डॉ. सुनयात सेन के राष्ट्रीय एकता के स्वप्न को सिद्धान्ततः पूर्ण करने के पश्चात् च्यांग काई शेक के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या चीन की प्रशासनिक व्यवस्था को सुसंगठित करने, साम्यवादियों में संघर्ष एवं चीन से विदेशी प्रभाव को समाप्त करने की थी। अतः अब च्यांग काई शेक ने क्रान्ति की अपेक्षा सुधार योजनाओं की ओर ध्यान केन्द्रित किया। **विनाकी** के अनुसार, **''यही कारण था कि च्यांग काई शेक की नानकिंग सरकार की योजना इस समय सुधार लाने की थी न कि क्रान्ति को आगे बढ़ाने की।''**[2] अतः अपने उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए च्यांग की नानकिंग सरकार ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किए :

(1) **राजनीतिक संगठन**—नानकिंग को राजधानी बनाने के पश्चात् च्यांग काई शेक के आदेशानुसार कैण्टन तथा पीकिंग स्थित अनेक कार्यालयों एवं राजदूतों को नानकिंग स्थानान्तरित किया गया। अगस्त, 1928 ई. में कुओमिनतांग की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति बुलाई गई। कार्यकारिणी समिति ने खुले अधिवेशन में नई सरकार की शासन व्यवस्था एवं संगठन के विषय में महत्वपूर्ण निर्णय लिए। यह निर्णय लिया गया कि नानकिंग सरकार की सम्पूर्ण शक्ति पर कुओमिनतांग का नियन्त्रण रहेगा। शासन व्यवस्था के निर्देशन हेतु एक केन्द्रीय राजनीतिक सभा (Central Political Council) की व्यवस्था की गई। इस परिषद् (सभा) के सदस्यों का चयन केन्द्रीय कार्य-कारिणी समिति एवं केन्द्रीय राज्य परिषद् के द्वारा होना निश्चित हुआ। **'केन्द्रीय राजनीतिक सभा' को देश की सर्वोच्च संस्था माना गया। यह माना गया कि इसका अध्यक्ष सरकार का अध्यक्ष होगा।** केन्द्रीय शासन को व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, परीक्षा एवं नियन्त्रण—इन पांच विभागों में विभक्त किया गया। इन विभागों को **'युआन'** कहा गया। यही नहीं, केन्द्रीय सरकार के संगठन के ही अनुरूप प्रान्तीय सरकारें भी बनीं। प्रान्तीय सरकारों के शासन हेतु 25 अक्टूबर, 1928 ई. को एक

कानून बनाया गया। इस कानून के अनुपालन में प्रान्तों में प्रान्तीय परिषदें स्थापित की गयीं। 12 मई, 1931 ई. को एक नया संविधान लागू किया गया जिसे 1934 ई. में संशोधित किया गया। इस संविधान में कहा गया कि "**चीन की सार्वभौम सत्ता जनता में निवास करती है। नस्ल, जाति, रंग, रूप के आधार पर कोई विभेद नहीं किया जाएगा। सभी कानून की दृष्टि में एक समान होंगे तथा सभी नागरिकों को मताधिकार प्राप्त होगा।.....सम्पत्ति पर नागरिकों का वैयक्तिक अधिकार होगा, स्थानीय शासन को प्रोत्साहित किया जाएगा।**" इस प्रकार च्यांग काई शेक इस नवगठित सरकार का अधिपति बना।

(2) **विरोधियों का दमन**—1931 ई. तक च्यांग काई शेक ने चीन में नए राष्ट्रवादी गणराज्य को सुदृढ़ स्वरूप तो प्रदान कर दिया था, परन्तु अभी तक उसके विरोधियों का पूर्णतः दमन नहीं हो पाया था। उसके प्रधानतः **तीन** विरोधी थे। **प्रथम**, विभिन्न प्रान्तों के वे सेनाध्यक्ष जो कि समयानुसार अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हो जाते थे। **द्वितीय**, कुओमिनतांग का वामपंथी पक्ष जो कि च्यांग काई शेक का प्रबल विरोधी था। **तृतीय**, कम्युनिस्ट जो कि भूमिगत रूप में अपना प्रसार करने में प्रयत्नशील थे और च्यांग काई शेक की नानकिंग सरकार के लिए सिरदर्द बन गए थे।

च्यांग काई शेक ने **प्रथम समस्या** को सुलझाने के लिए प्रारम्भ में सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाया। उसने स्वेच्छाचारी सेनाध्यक्षों से समझौतावादी रुख को अपनाते हुए मिली-जुली सरकार की स्थापना का प्रयास किया, परन्तु अपने इस प्रयास में असफल हो जाने पर उसे स्वेच्छाचारी सेनाध्यक्षों एवं सिपहसालारों से युद्ध करने पड़े। इनमें उसे विशेषतः मंचूरिया के सेनाध्यक्ष च्यांग सूलिफंग एवं शेन्सी प्रान्त के सेनाध्यक्ष चेन सी से कठोर मुकाबला करना पड़ा। मंचूरिया एवं शेन्सी के सेनाध्यक्षों की शक्ति का जिस प्रकार उसने दमन किया उससे भयभीत होकर उत्तरी चीन के शेष सेनाध्यक्षों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

अब च्यांग काई शेक ने **द्वितीय समस्या** को सुलझाने का प्रयत्न किया। कुओमिनतांग के वामपंथी गुट ने वांग चिंग वेई तथा चेंग पू लो के नेतृत्व में कैंटन में अपनी अलग सरकार बनाकर कैंटन को राजधानी बना लिया। इसी बीच मंचूरिया में जापानी संकट के कारण दोनों पक्षों में एक समझौता हो गया। अतः च्यांग काई शेक को नानकिंग सरकार के संगठन में परिवर्तन कर शासन संचालन का गुरुतर भार वांग चिंग वेई एवं चेंग पू लो को भी सौंपना पड़ा। **अतः शासन संचालन तीन व्यक्तियों के हाथ में विभक्त हो गया। तीनों (च्यांग काई शेक, वांग चिंग तथा चेंग पू लो) ने मिलकर एक समिति का भी गठन किया।** इसी बीच वामपंथी नेताओं की आपसी फूट का लाभ उठाकर च्यांग काई शेक ने अपनी स्वतन्त्र शक्ति पुनः स्थापित कर ली। अतः वामपंथी नेताओं ने पुनः कैंटन में अपनी अलग सरकार का गठन कर लिया। इस समय वास्तव में च्यांग काई शेक इस सरकार का विरोध नहीं कर सका, क्योंकि उसके सामने सबसे गम्भीर एवं जटिल **समस्या साम्यवादियों की उमड़कर आ रही थी।**

1933 ई. तक चीन के विभिन्न प्रान्तों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर **साम्यवादियों** ने अपनी सरकार का गठन कर लिया था। साम्यवादियों ने चीन के कुल 3,30,000 वर्ग मील क्षेत्रफल पर आधिपत्य जमा लिया था, जिसकी जनसंख्या लगभग 9,00,00,000 से अधिक थी। अपने आधिपत्य वाले क्षेत्र में साम्यवादियों ने जमींदारों से जमीन छीनकर सर्वसाधारण में बांट दी थी। **जनता को आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु बैंकों की स्थापना की।** अपने अधीनस्थ क्षेत्र में उन्होंने अफीम के स्थान पर अनाज के उत्पादन पर बल दिया। इससे साम्यवादियों को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ साम्यवादियों की बढ़ती हुई इस सफलता ने च्यांग काई शेक की सरकार के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया। अतः शेक ने साम्यवादियों के दमन के लिए दुष्कर उपाय किए और प्रशासन में सुधारों की ओर ध्यान दिया।

(3) **सुधार कार्यक्रम**—सुधार कार्यक्रम निम्नलिखित प्रकार से लागू किये गये :

(अ) **आर्थिक क्षेत्र**—चीन की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए च्यांग काई शेक ने टी. वी. सुंग (T. V. Soong) नामक अर्थशास्त्री की अधीनता में एक अर्थविभाग का पुनर्गठन किया। टी. वी. सुंग ने चीन की राष्ट्रीय आय में वृद्धि का प्रयत्न किया, परन्तु इस बात का भी ध्यान रखा कि चीन की राजकीय आय के स्रोतों पर विदेशी प्रभाव न हो। चीन में रुई, चीनी, चना, चाय, सिल्क, आदि के उत्पादन पर विशेष बल दिया जाने लगा। 1937 तक चीन से चाय, चीनी एवं सिल्क विदेशों को निर्यात किया जाने लगा। **लाट्रेट** के अनुसार, "**सिल्क के उत्पादन की प्रसिद्धि के कारण ही अमेरिका का एक जीव विज्ञान का विद्वान चीन आकर**

सिल्क के कीड़ों को अमेरिका ले गया।''[1] यही नहीं, चीन के औद्योगीकरण की ओर भी विशेष ध्यान दिया गया। 1937 ई. तक शंघाई, कैण्टन, हांको, आदि स्थानों पर पश्चिमी देशों के सदृश कल-कारखाने खुल गए। मुद्रा पद्धति में भी सुधार हेतु प्रयास किए गए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आयोग का गठन किया गया। सैण्ट्रल बैंक ऑफ चायना, दि बैंक आफ चायना, फारमर्स बैंक ऑफ चायना एवं दि बैंक ऑफ कम्युनिकेशन को नोट छापने का अधिकार प्रदान किया गया। अनेक बैंकों की भी स्थापना की गई।

(ब) **न्याय सम्बन्धी सुधार**—न्यायिक क्षेत्र में भी सुधार हेतु चीन में फ्रांस व जर्मनी की कानून पद्धति से प्रभावित एक नया कानून संग्रह निर्मित किया गया। इस कानून संग्रह में मूलतः दीवानी मामलों की व्याख्या थी। औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र से भी सम्बन्धित कानूनों का निर्माण किया गया। नानकिंग में एक उच्चतम न्यायालय की स्थापना की गई तथा चीन में अनेक अदालतें खोली गयीं। इस प्रकार प्राचीन रीति-रिवाज एवं परम्पराओं पर आधारित चीन की कानून व्यवस्था में परिवर्तन किया गया।

(स) **सैन्य सुधार**—च्यांक काई शेक ने चीन के सैन्य पुनर्गठन पर विशेष ध्यान दिया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु विशेष रूप से जर्मन विशेषज्ञों को चीन में आमन्त्रित किया गया। 1931 ई. को चीन में एक जर्मन सैनिक मण्डल तक स्थापित किया गया। 1935 ई. में इस मण्डल का अध्यक्ष '**फॉन सीम्ट**' था।

(द) **आवागमन की व्यवस्था**—च्यांग काई शेक ने आवागमन की व्यवस्था को सुविधाजनक बनाने का भरसक प्रयत्न किया। पृथक् रेल विभाग की स्थापना की गई। चीन की केन्द्रीय एवं प्रान्तीय रेलवे इसी विभाग के नियन्त्रण में कर दी गयीं। कैण्टन एवं नूधांग के मध्य अनेक रेलवे लाइनें बिछायी गयीं। हूनान, कियांगसी, क्वांगसी, चिकिचांग, आन्हुई, कानसू, कियाचकाऊ में अनेक सड़कें बनाई गयीं। सड़कों एवं रेलवे लाइनों के इस प्रकार विकास का सबसे बड़ा कारण शान्ति व्यवस्था एवं युद्ध संचालन में आसानी था। यही नहीं, वायुयानों के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया गया। नाविक कम्पनियों की भी स्थापना की गई। डाक-तार, टेलीफोन, आदि की समुचित व्यवस्था के लिए पोस्ट आफिस का पुनर्गठन किया गया।

इस प्रकार नानकिंग सरकार ने सुधार कार्यक्रम का जो दौर प्रारम्भ किया वह अत्यन्त महत्वपूर्ण था, परन्तु जनसाधारण को कोई विशेष लाभ नहीं मिल पाया, इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि इस सुधार व्यवस्था में डॉ. सुनयात सेन के या कुओमिनतांग के **सामाजिक न्याय के सिद्धान्त**' (आजीविका सिद्धान्त) को पृष्ठभूमि के नहीं रखा गया।

च्यांग काई शेक अथवा नानकिंग सरकार की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF CHANG KAI SHEK OR NANKING GOVERNMENT)

डॉ. सुनयात सेन ने मृत्यु से पूर्व रूस के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने की अपील की थी। प्रारम्भ में च्यांग काई शेक के रूस के साथ मधुर सम्बन्ध बन रहे। डॉ. सेन की मृत्यु के पश्चात् उसने एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था, ''**हमें विश्वास है कि हम अपने उद्देश्य की पूर्ति में अवश्य सफल होंगे। इस सफलता का पूरा श्रेय हमारे रूसी साथियों को होगा। यदि चीन की क्रान्ति की विजय होती है तो यह विजय रूसी क्रान्ति की विजय है।**'' परन्तु कालान्तर में दोनों के बीच सम्बन्धों में दरार उत्पन्न हो गई। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि च्यांग काई शेक यथाशीघ्र चीन के एकीकरण का पक्षपाती थी। वह उत्तर की ओर से आक्रमण कर सैनिक सरदारों की शक्ति को समूल नष्ट करना चाहता था, परन्तु कुछ रूसी सलाहकार उसकी इस नीति के विरोधी थे। **दूसरा सबसे प्रबल कारण चीन में कम्युनिस्टों का बढ़ता प्रभाव था।** रूस साम्यवादी देश था। इधर इसका लाभ उठाकर पूंजीवादी साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने उसे सोवियत संघ के विरुद्ध भड़काना भी शुरू कर दिया। अतः उसने रूसी सलाहकारों को चीन से चले जाने के आदेश दिए। मई, 1929 ई. में नानकिंग की अधीनस्थ मंचूरिया के शासक '**च्यांग स्युह ल्यांग**' ने वहां पर स्थित रूसी कार्यालयों पर अपना कब्जा कर लिया। अनेक रूसियों को बन्दी बना लिया। 1924 ई. में चीन और सोवियत संघ के बीच हुए समझौते का अतिक्रमण कर मंचूरिया के शासक ने जुलाई 1929 को रेलवे, टेलीफोन एवं तार व्यवस्था पर अपना पूर्ण आधिपत्य स्थापित कर लिया। 1924 के चीन व रूस के बीच हुए समझौते के अनुसार पूर्वी चीन की रेलवे व्यवस्था पर दोनों देशों का अधिकार माना गया। रूस के लिए यह सब असह्य हो गया। अतः उसने 13 जुलाई, 1929 ई. को नानकिंग सरकार को स्पष्ट रूप से चेतावनी दे दी कि वह तीन दिन के भीतर पूर्ववत्

स्थिति कायम करे। तीन दिन पश्चात् रूस ने चीन से सभी राजनयिक सम्बन्ध समाप्त कर दिए। इस पर चीन ने मंचूरिया से रूसी प्रबन्धक एवं कर्मचारियों को निष्कासित कर दिया। नवम्बर 1929 ई. में रूस ने चीन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अन्ततः 22 दिसम्बर, 1929 ई. को नानकिंग में रूसी-चीनी सन्धि हुई। यह सन्धि इतिहास में '**खाबोरोव्स्क**' के नाम से भी जानी जाती है। इस सन्धि के अनुसार रूस ने चीन में अपने राज्यक्षेत्रातीत सम्बन्धी अधिकारों का परित्याग कर दिया और साथ ही बॉक्सर विद्रोह के पश्चात् चीन पर थोपी गई क्षतिपूर्ति की राशि को भी रूस ने माफ कर दिया। मंचूरिया में अब पुनः रूस के कार्यालय खुल गए और रूसी कर्मचारी कार्य करने लगे।

रूस के साथ चीन के इन बिगड़े हुए सम्बन्धों का चीन की आन्तरिक स्थिति पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। कुओमिनतांग के कम्युनिस्ट च्यांग काई शेक के कट्टर विरोधी हो गए। फलतः कुओमिनतांग में फूट पड़ गई और एक भयावह संघर्ष का आरम्भ हुआ, जिससे कुओमिनतांग की स्थिति कमजोर हो गई।

विदेशी शक्तियों से की गई असमान सन्धियों को समाप्त करने का प्रयत्न—चीनी खरबूजे के बंटवारे के क्रम में जिस प्रकार विदेशी शक्तियों ने अपने हितों की पूर्ति में चीन से समय-समय पर असमान सन्धियां की थीं, जिनके अनुसार जापान, अमेरिका, इंग्लैण्ड जैसी साम्राज्यवादी शक्तियों को चीन में व्यापारिक एवं राज्यक्षेत्रातीत सम्बन्धी विशेषाधिकार प्राप्त हो गए थे। च्यांग काई शेक ने विदेशों के साथ असमानता के आधार पर की गई सन्धियों का विरोध किया। 19 अक्टूबर, 1925 ई. को **चीन और आस्ट्रिया** के बीच सन्धि के अनुसार आस्ट्रिया के चीन में राज्यक्षेत्रातीत सम्बन्धी अधिकार समाप्त हो गए। च्यांग काई शेक को **बैल्जियम** से सफल सन्धि करने में सफलता मिली। बैल्जियम से हुई सन्धि के अनुसार तिंत्सीन में बैल्जियम अधिकृत प्रदेश पर चीन की सरकार का आधिपत्य मान लिया गया। बैल्जियम ने अपने राज्यक्षेत्रातीत अधिकार त्याग दिए तथा दोनों देशों ने पारस्परिक विचार-विमर्श से पारस्परिक व्यापारिक मतभेदों को हल करने का वचन दिया।

जुलाई, 1928 ई. को **संयुक्त राज्य अमेरिका** से चुंगी की स्वायत्तता के सन्दर्भ में एक सन्धि हुई। 1 फरवरी, 1929 ई. को जापान ने भी चीनी चुंगी बेहिचक स्वीकार कर ली। ग्रेट ब्रिटेन एवं फ्रांस ने भी इस सम्बन्ध में चीन के पक्ष में अपने हितों को छोड़ दिया, परन्तु ये विदेशी शक्तियां चीन में राज्यक्षेत्रातीत अधिकार को सहजता से त्यागने की पक्षपाती नहीं थीं। 27 अप्रैल, 1929 ई. के एक चीनी पत्र जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन एवं फ्रांस, आदि देशों से अपने राज्यक्षेत्रातीत अधिकार छोड़ने की अपील की गई थी, के उत्तर में इन शक्तियों ने स्पष्ट कर दिया कि "**जब तक चीन की न्याय व्यवस्था पाश्चात्य पद्धति के अनुरूप नहीं हो जाती तब तक राज्यक्षेत्रातीत अधिकार का परित्याग असम्भव है।**" च्यांक काई शेक ने हिम्मत नहीं हारी। उसने सितम्बर, 1929 ई. को पुनः अपनी मांग विदेशी शक्तियों एवं राष्ट्र संघ के समक्ष रखी। यहीं नहीं, 26 दिसम्बर, 1929 ई. को कुओमिनतांग की केन्द्रीय राजनीतिक समिति ने यह प्रस्ताव परिषद् के सामने रखा कि 1 जनवरी, 1930 के उपरान्त विदेशी शक्तियों के राज्यक्षेत्रातीत अधिकार समाप्त करने के आदेश दे दिए जाएं। चीन की सरकार ने इस पर राज्यक्षेत्रातीत अधिकार की समाप्ति की घोषण कर दी। इससे विदेशी शक्तियों के कान खड़े हो गए। इसी बीच मंचूरिया संकट उत्पन्न हो गया और चीनी सरकार अपने पारित आदेशों का कठोरता से पालन नहीं कर पाई, लेकिन इससे चीन को इतना लाभ अवश्य मिल गया कि 1930 के बाद दस राष्ट्रों ने अपने राज्यक्षेत्रातीत अधिकार को त्याग दिया।

यही नहीं, **विदेशी शक्तियों को चीन में पट्टे प्राप्त हुए थे।** नानकिंग की सरकार इस पट्टेदारी व्यवस्था का अन्त करना चाहती थी। पट्टेदारी व्यवस्था से तात्पर्य कुछ ऐसे क्षेत्रों की व्यवस्था से था, जो कि राजनीतिक रूप से तो चीन की सरकार के नियन्त्रण में थे, परन्तु उन पर आर्थिक नियन्त्रण विदेशी शक्तियों का था। पट्टेदारी व्यवस्था को समाप्त करने में नानकिंग सरकार को सफलता प्राप्त हुई। ग्रेट ब्रिटेन को हांको, क्याउ चाऊ, चिनकिआंग तथा अमोय में अपने पट्टे त्यागने पड़े। वेई-हाई-वेई का नौसैनिक अड्डा जिस पर ब्रिटेन का अधिकार था चीन को लौटा दिया गया। बैल्जियम ने तिन्तसीन से अपना अधिकार छोड़ दिया। इतना होने पर भी चीन में स्थापित 13 विदेशी पट्टों को नानकिंग सरकार समाप्त न कर सकी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि च्यांग काई शेक की नानकिंग सरकार को गृह एवं विदेश दोनों क्षेत्रों में गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ा। च्यांग काई शेक ने दोनों क्षेत्रों में आई समस्याओं को सुलझाने का पूर्ण प्रयत्न किया, परन्तु वह पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाया। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि उसने डॉ. सुनयात सेन के सिद्धान्तों से हटकर कार्य करना प्रारम्भ किया। इसका परिणाम यह निकला कि कुओमिनतांग में फूट पड़ ही गई, साथ ही साम्यवादियों से उसका भीषण संघर्ष प्रारम्भ हो गया और **आगे आने वाले वर्षों में यह संघर्ष चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना के साथ समाप्त हुआ।**